Class. B. Com II
Subject. M.F.I
Paper - IV (S)
Topic - Investment policy of Bank
Lecture Sequence 9
By Dr. C P Sahu
Marwari College, Darbhanga

बैंक की विनियोग नीति -

बैंक एक तरफ जनता एवं अन्य साधनों से धन प्राप्त करता है तो दूसरी तरफ लाभप्रद क्षेत्रों में विनियोग भी करता है। इसलिए सिजवर्ट ने बैंकों को पूँजी अथवा मुद्रा का व्यापारी कहा है। किसी अन्य व्यापारिक संस्था की तरह बैंक का उद्देश्य भी लाभ कमाना होता है। लेकिन बैंक लाभ कमाने के साथ उसका सामाजिक उत्तरदायित्व का भी निर्वाह करता है। किसी बैंक की कार्यक्षमता का मापदण्ड उसकी लाभदायकता ही है। बैंक प्राप्त कोषों का विभिन्न क्षेत्रों में इस प्रकार विनियोग करता है कि विनियोगों से अधिकतम लाभ, धन की सुरक्षा और धन की तरलता बनी रहे। व्यापारिक बैंक अपने धन को विनियोजित करते समय "सभी अंडों को एक टोकरी में रखें" वाले सिद्धान्त का पालन करता है।

बैंक की निधियों का स्रोत :- (Sources of Bank's Funds) -

भारत में व्यापारिक बैंकों को आन्तरिक एवं बाह्य साधनों से पूँजी की प्राप्ति होती है। आन्तरिक संसाधन में अंश पूँजी, सुरक्षित कोष अवितरित लाभ है जबकि बाह्य संसाधन में जनता से जमा रुपये, अन्य व्यापारिक बैंकों से ऋण एवं रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया से ऋण प्राप्त करता है।

(1) चुकता अंश पूँजी :- व्यापारिक बैंक पूँजी का एक महत्वपूर्ण भाग जनता से निर्गमन कर अंशों के बिक्री से प्राप्त करती है। क्योंकि बैंक स्थापना के पूर्व यह निश्चित किया जाता है कि व्यवसाय चलाने के लिए कितनी पूँजी की आवश्यकता होगी। बैंक को निश्चित करना होता है कि अधिकृत पूँजी (Authorised Capital) क्या होगा। इस पूँजी को पंजीकृत किया जाता है। इसका कुछ भाग (अंश), जनता के बीच बिक्री के लिए निर्गमित किया जाता है इसे (Issued Capital) निर्गमित पूँजी कहा जाता है। जनता द्वारा क्रय के लिए जितने अंश के लिए आवेदन देती है उसे प्रार्थित पूँजी (Subscribed Capital) कहते हैं। वास्तव में जितना अंश जनता

Scanned with CamScanner

क्रय करती है उसे चुकता पूँजी (Paid up Capital) कहलाती है।

(2) सुरक्षित कोष एवं संचिति - बैंक की निधि का एक अन्य साधन उसका सुरक्षित कोष है। बैंक अपने लाभ को एक निश्चित भाग में बैंक के अंशधारियों को लाभांश (Dividend) के रूप में देती है तथा शेष भाग सुरक्षित कोष में रखता है। इस सुरक्षित कोष से भविष्य में यदि कोई हानि होता है तो उसे इस धन से पूरा करते हैं। जब यह कोष अधिक मात्रा में संचित होता है तो यह बैंक निधि का साधन हो जाता है। जिससे अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करती है।

(3) निक्षेप (जमा प्राप्त करना) — जनता के द्वारा विभिन्न खातों के माध्यम से जमा के रूप में रुपया प्राप्त करता है। बैंक की पूँजी का एक बड़ा साधन जन-निक्षेप है। बैंक अपने ग्राहकों से स्थायी जमा खाता, चालू खाता, बचत खाता एवं आवर्ती खाता इत्यादि के माध्यम से जमा स्वीकार करती है। इसके बदले बैंक अपने ग्राहकों को जमा के बदले ब्याज देती है।

(4) ऋण - साधारण परिस्थितियों में बैंक अपनी अंश पूँजी तथा जमा धन के द्वारा ही अपना कार्य करता है लेकिन असाधारण स्थिति में वह ऋण भी लेता है ऐसे ऋण अन्य बैंक या केंद्रीय बैंक से लिया जाता है। ग्राहकों द्वारा अधिक मात्रा में नगद माँग करता है तो ऐसी स्थिति में केंद्रीय बैंक से ऋण लेकर पूरा करता है।

(5) साख का निर्माण - बैंक द्वारा ऋण देने की प्रक्रिया ऐसी होती है कि स्वीकृत ऋण एक मुश्त न देकर उनके खाते में स्वीकृत ऋण जमा कर देती है। ग्राहक अपनी आवश्यकतानुसार रुपये निकालता है। इस प्रक्रिया से साख का निर्माण करके बैंक अपने कोष में वृद्धि करता है।

विनियोग नीति का सिद्धान्त : - (Principles of Investment Policy)

बैंक का महत्वपूर्ण कार्य अपनी पूँजी का विनियोग करके लाभ कमाना होता है। बैंक विनियोगों से ब्याज प्राप्त करता है और अंश पूँजी से प्राप्त राशि पर लाभांश एवं जमा राशि पर ब्याज देता है। बैंक के अधिकारियों को विनियोग नीति का निर्धारण करने के लिए दूरदर्शिता एवं अनुभव के आधार पर कार्य करना चाहिए। विनियोग करते समय निम्न बातों पर ध्यान देना चाहिए। —

Scanned with CamScanner

(1) कोष की सुरक्षा - बैंक की अग्रिम तथा विनियोग नीति (4) के संबंध में धन की सुरक्षा सबसे पहली आवश्यकता है क्योंकि अधिक लाभ कमाने के लिए सुरक्षा पर ध्यान न देना हानिकारक हो सकता है। बैंक के प्रबंधक को सोचसमझकर कार्य करना चाहिए।

(2) कोष की तरलता - बैंक की सफलता के लिए ग्राहक का विश्वास आवश्यक है। ग्राहक बैंक में अपना रुपये इस विश्वास के साथ जमा करता है कि जब वे चाहे अपना रुपये निकाल सकता है। बैंक अपने ग्राहकों की माँग को पूरा करने के लिए निश्चित राशि नगद कोष में रखता है।

(3) कोष की लाभदायकता - प्रत्येक बैंक का मुख्य उद्देश्य लाभ कमाना होता है। ऋण देते समय इस बात पर ध्यान देता है कि उससे कितना लाभ होगा। यदि ऋण देने एवं ऋण प्राप्त करने की ब्याज दर में अधिक अन्तर है तो ऋण देना अधिक लाभदायक होगा।

(4) विक्रयशीलता - विक्रयशीलता से तात्पर्य उपलब्ध बाजार से है जहाँ सम्पत्तियों एवं प्रतिभूतियों का विक्रय आसानी से हो सके

(5) मूल्य में स्थिरता - बैंक को अपने अनुभव के आधार पर अपने धन को उन प्रतिभूतियों में लगाना चाहिए जिनके मूल्य में उच्चावचन कम हो। अधिक उच्चावचन वाले प्रतिभूतियों में लाभ की आशा भले ही हो लेकिन हानि होने की भी संभावना कम नहीं होती है।

(6) राष्ट्रीय हित - बैंक को विनियोग करते समय राष्ट्रहित को भी ध्यान में रखना चाहिए जिससे राष्ट्रीय विकास अधिक से अधिक हो।

(7) कोष की उत्पादकता - ऋण के रूप में अपने धन को विनियोग करते समय ऋण का अधिकांश भाग उत्पादक के क्षेत्र में लगाना चाहिए जिससे विनियोग अधिक सुरक्षित रह सके।

(8) कर से मुक्ति - अपनी आय में वृद्धि के लिए बैंक को धन के विनियोग के लिए ऐसे प्रतिभूति का चुनाव करना चाहिए जिनकी आय आयकर एवं अन्य करों से मुक्त हो।

(9) विनियोग नीति का अध्ययन - देश के सभी व्यापारिक बैंकों को केन्द्रीय बैंक नियंत्रित करता है इसलिए केन्द्रीय बैंक की विनियोग नीति का भी अध्ययन करना चाहिए।

—— x ——